E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(4): 340-342
Received: 12-08-2020
Accepted: 17-09-2020

डॉ॰ कविता झा
पी. जी. टी., झरियाराज +2 उच्च विद्यालय, झरिया, धनबाद, झारखंड, भारत

Corresponding Author:
डॉ॰ कविता झा
पी. जी. टी., झरियाराज +2 उच्च विद्यालय, झरिया, धनबाद, झारखंड, भारत

रक्तार्थक-तद्धित-प्रत्ययों का उद्भव और विकास

डॉ॰ कविता झा

सारांश
रक्त अर्थ में पाँच प्रत्यय विहित हुए हैं - अण्, ठक्, अन्, कन् तथा अञ्। इनमें से ‘ अण्’ प्रत्यय का उद्भव वेदांगों में दीखता है और इसका विकास शिवराजविजय तक हुआ है। ‘ ठक्’ प्रत्यय का उद्भव भट्टिकाव्य में दीखता है और इसका विकास नल-चम्पू तक हुआ है। ‘ अन्’ प्रत्यय का उद्भव बालचरित में दीखता है और इसका विकास केवल शिवराजविजय में ही उपलब्ध होता है। ‘ कन्’ प्रत्यय का उद्भव एवं विकास दोनों ही महाभारत में दीखता है। ‘ अञ्’ प्रत्यय का उद्भव ब्राह्मण-ग्रन्थों में दीखता है और इसका विकास नैषधीयचरित तक हुआ है।

मुख्य शब्द- रक्तार्थक, उद्भव, विकास, अण्, ठक्, अन्, कन्, अञ्।

1. प्रस्तावना
पाणिनीय-अष्टाध्यायी में रक्तार्थक-तद्धित-प्रत्यय विधायक दो सूत्र हैं - ‘ तेन रक्तं रागात्’ [1] तथा ‘ लाक्षा-रोचनाट् ठक्’ । [2] इन दोनों सूत्रों में प्रथम सूत्र उत्सर्ग (सामान्य) सूत्र है, जो अर्थ-विधायक सूत्र है। यहाँ ‘ प्राग्दीव्यतोऽण्’ [3] सूत्र के अधिकार बल से रक्त अर्थ में अण् का विधान होता है। द्वितीय सूत्र प्रथम सूत्र का अपवाद (विशेष) सूत्र है, जो रक्त अर्थ में ही ठक् का विधान करता है। दोनों प्रत्यय सानुबन्ध पठित हैं। ‘ अण्’ का णकार प्रकृति के आदि स्वर की वृद्धि [4] के लिए है। ‘ ठक्’ का ककार प्रकृति के आदि स्वर की वृद्धि [5] और अन्तोदात्त स्वर [6] के लिए है। ‘ ठक्’ के ‘ ठ’ के स्थान पर ‘ इक’ [7] का आदेश होता है।

2. रक्तार्थक अण् प्रत्यय
रक्तार्थक ‘ अण्’ प्रत्यय का उद्भव सर्वप्रथम वेदांगों में दीखता है और इसका विकास शिवराजविजय तक हुआ है। वेदांगों [8] में कषाय और मञ्जिष्ठा; महाभारत [9] में कषाय और सुधा; रामायण [10] में कषाय; सौन्दरनन्द [11] में कषाय और मञ्जिष्ठा; बुद्धचरित [12] में कषाय और मञ्जिष्ठा; स्वप्नवासवदत्त [13] में कषाय; अविमारक [14] में सुधा; मालविकाग्निमित्र [15] में कषाय; रघुवंश [16] में कषाय; कुमारसम्भव [17] में सुधा; जातकमाला [18] में कषाय; मृच्छकटिक [19] में कषाय; शृंगारशतक [20] में मञ्जिष्ठा,

किरातार्जुनीय [21] में मञ्जिष्ठा; वासवदत्ता [22] में कषाय और मञ्जिष्ठा; हर्षचरित [23] में कषाय; रत्नावली [24] में सिन्दूर, दशकुमारचरित [25] में सुधा; शिशुपालवध [26] में कुसुम्भ एवम् मञ्जिष्ठा; उत्तररामचरित [27] में मञ्जिष्ठा; महावीरचरित [28] में मञ्जिष्ठा; विद्धशालभञ्जिका [29] में मञ्जिष्ठा; कर्पूरमञ्जरी [30] में मञ्जिष्ठा; कथासरित्सागर [31] में कषाय; राजतरंगिणी [32] में कषाय; नैषधीयचरित [33] में हिङ्गुल, मञ्जिष्ठा, अलक्तक, कषाय एवम् शिवराजविजय [34] में कषाय - इन प्रातिपदिकों से ' अण्' प्रत्यय विहित मिलता है।

3. रक्तार्थक ' ठक्' प्रत्यय

रक्तार्थक ' ठक्' प्रत्यय का उद्भव सर्वप्रथम भट्टिकाव्य में दीखता है और इसका विकास नलचम्पू तक हुआ है। भट्टिकाव्य [35] में यह लाक्षा; हर्षचरित [36] में कर्दम; किरातार्जुनीय [37] में रोचन; दशकुमारचरित [38] में कर्दम एवं नलचम्पू [39] में कर्दम - इन प्रातिपदिकों से ' अण्' प्रत्यय विहित मिलता है।

4. रक्तार्थक ' अन्' प्रत्यय

रक्तार्थक ' अन्' प्रत्यय का उद्भव सर्वप्रथम बालचरित [40] में दीखता है और इसके विकास की परम्परा में दृष्टिपात करने पर केवल शिवराजविजय [41] में ही उपलब्ध होता है। दोनों ही जगह यह ' नीली' प्रातिपदिक से विहित मिलता है।

5. रक्तार्थक ' कन्' प्रत्यय

रक्तार्थक ' कन्' प्रत्यय का उद्भव एवं विकास दोनों ही महाभारत [42] में ही दीखता है। इसके अतिरिक्त यह अध्ययन में कहीं प्राप्त नहीं हुआ है।

6. रक्तार्थक ' अञ्' प्रत्यय

रक्तार्थक ' अञ्' प्रत्यय का उद्भव सर्वप्रथम ब्राह्मण ग्रन्थों में दीखता है और इसका विकास नैषधीयचरित तक हुआ है। ब्राह्मण-ग्रन्थों [43] में महारजन, महारोहण एवं हरिद्रा; महाभारत [44] में हरिद्रा; कादम्बरी [45] में हरिद्रा; प्रसन्नराघव [46] में हरिद्रा एवं नैषधीयचरित [47] में भी हरिद्रा प्रातिपदिक से विहित मिलता है।

7. निष्कर्ष

इस प्रकार पुराणों को छोड़कर शिवराजविजय-पर्यन्त समग्र वैदिक एवं लौकिक साहित्य में रक्तार्थक प्रत्ययों के कुल 15 प्रयोग मिलते हैं जिनमें अण्-प्रत्ययान्त ' काषायम्' तथा ' माञ्जिष्ठम्' का प्रयोग बाहुल्य से प्राप्त होता है।

8. सन्दर्भ

1. वही, 4.2.1
2. वही, 4.2.2
3. वही, 4.1.83
4. वही, 7.2.117
5. वही, 7.2.118
6. वही, 6.1.165
7. वही, 7.3.50
8. काषायम्, (आ॰गृ॰ 1.19.11, कौ॰गृ॰ 2.1.8, आग्नि॰गृ॰ 1.1.4, हि॰गृ॰ 1.9.12, आप॰ध॰ 1.8.12) माञ्जिष्ठम्, (वा॰ध॰ 11.65, हि॰ध॰ 1.73)
9. काषायम्, (3.76.9, 97.19, 295.18, 9.62.6, 12.18.32, 167.16, 320.47, 13.91.43, 123-8, 14.46.5), सौधम्, (3.214.5)
10. काषायम्, (1.4.23, 2.12.98, 16.3, 3.46.3, 6.125.34, 7.97.13)
11. काषायम्, (6.48, 7.48, 52, 10.4), माञ्जिष्ठम् (10.28)
12. काषायम्, (6.61, 63, 9.43, 10.13, 24)
13. काषायम्, (1.9)
14. सौधम्, (4.11)
15. काषायम् (5.11-12)
16. काषायम् (15.77)
17. सौधम् (12.5)
18. काषायम् (21.1-2)
19. काषायम् (8.3-4)
20. माञ्जिष्ठम् (97)
21. माञ्जिष्ठम् (7.36)
22. काषायम् (225.5), माञ्जिष्ठम् (225.3)
23. काषायम् (3.173)
24. सैन्दूरम् (1.12)

25. सौधम् (1.5.107)
26. कौसुम्भम् (8.30, 11.52), माञ्जिष्ठम् (18.34)
27. माञ्जिष्ठम् (4.20)
28. माञ्जिष्ठम् (1.18)
29. माञ्जिष्ठम् (1.25, 2.3-4, 22, 3.27-28)
30. माञ्जिष्ठम् (2.4)
31. काषायम् (12.6.34)
32. काषायम् (3.320)
33. हैङ्गूलम् (7.20, 22.6), माञ्जिष्ठम् (11.15), आलक्तक॰ (14.62), काषायाम् (22.12)
34. काषायाम् (2.55, 63, 69, 3.159, 11.250)
35. लाक्षिके (5.62)
36. कार्दमिकम् (2.89.10, 7.361)
37. रौजनिकीम् (5.45)
38. कार्दमिक॰ (2.3.95)
39. कार्दमिक॰ (1.47-48)
40. नीलम् (1.19)
41. नीलम् (1.40, 2.51, 4.119)
42. पीतकम् (5.64.18)
43. माहारजनम् (श॰14.5.3.10), महारोहणस्य (जैमि॰3.348), हारिद्र: (श॰ 13.4.4.8)
44. हारिद्र॰ (4.42.7, 43.15, 12.280.40)
45. हारिद्र॰ (1.193.3)
46. हारिद्र॰ (2.7)

संकेताक्षर-सूची

1. आ॰गृ॰ = आश्वलायनगृह्यसूत्र
2. आप॰ध॰ = आपस्तम्बधर्मसूत्र
3. आग्नि॰गृ॰ = आग्निवेश्यगृह्यसूत्र
4. कौ॰गृ॰ = कौषीतकिगृह्यसूत्र
5. जैमि॰ = जैमिनीय ब्राह्मण
6. वा॰ध॰ = वासिष्ठधर्मसूत्र
7. श॰ = शतपथब्राह्मण
8. हि॰गृ॰ = हिरण्यकेशिगृह्यसूत्र
9. हि॰ध॰ = हिरण्यकेशिधर्मसूत्र